RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

CLASS 12th | HISTORY

ARJUN BATCH

बंधुत्व जाति तथा वर्ग

Chapter-3 | Part-5



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?

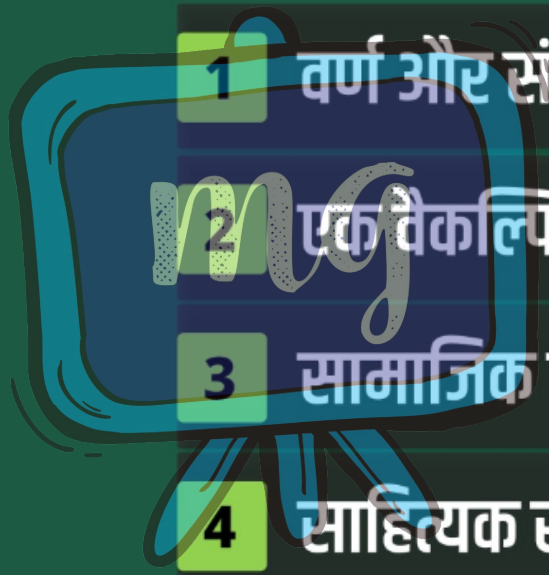

1. वर्ण और संपत्ति के अधिकार
2. एक वैकल्पिक सामाजिक भागीदारी
3. सामाजिक विषमताओं की व्याख्या
4. साहित्यक स्त्रोतों का इस्तेमाल
5. सादृश्यता की खोज

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

↑ पैसे - प्रतिष्ठा ↑

↓ पैसे - प्रतिष्ठा ↓

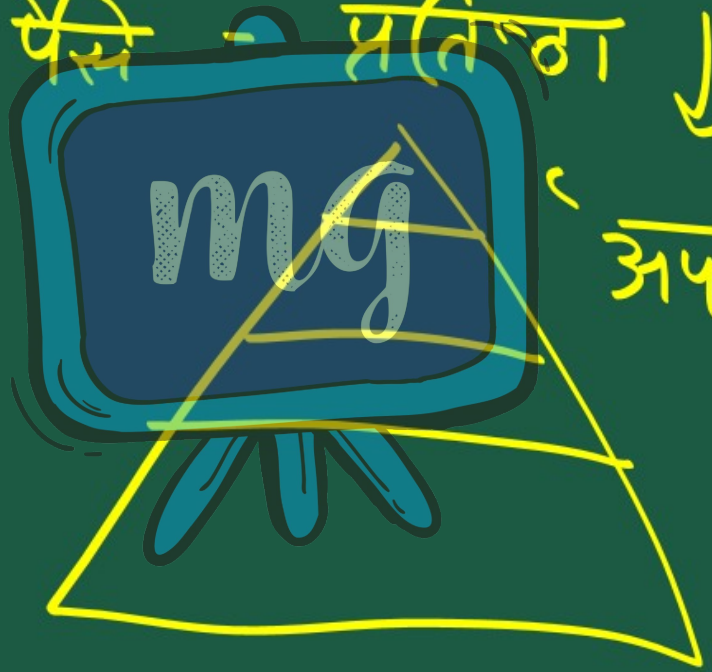

(अपवाद)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



वर्ण और संपत्ति के अधिकार :-

- ब्राह्मणीय ग्रंथों के अनुसार संपत्ति पर अधिकार का एक और आधार वर्ण था। (लैंगिक आधार के अतिरिक्त)
- शूद्रों के लिए एकमात्र 'जीविका' ऐसी सेवा थी जिसमें हमेशा उनकी इच्छा शामिल नहीं होती थी।
- हालांकि तीनों उच्च वर्णों के पुरूषों के लिए विभिन्न जीविकाओं की संभावना रहती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- यदि इन सब विधानों को वास्तव में कार्यान्वित किया जाता है तो ब्राह्मण और क्षत्रिय सबसे धनी व्यक्ति होते।
- यह कुछ हद तक वास्तविकता से मेल भी खाता है साहित्यिक परम्पराओं में पुरोहितों और राजाओं का वर्णन मिलता है जिसमें राजा अधिक धनी चित्रित होते थे। पुरोहित भी सामान्यतः धनी दर्शाये जाते हैं। हालांकि यदा-कदा निर्धन ब्राह्मण का भी चित्रण मिलता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



वर्णभेद की आलोचना –

एक ओर जहां समाज के ब्राह्मणीय दृष्टिकोण को धर्मसूत्र और धर्मशास्त्रों में संहिताबद्ध किया जा रहा था वहीं अन्य परम्पराओं ने वर्ण व्यवस्था की आलोचना प्रस्तुत की।

इनमें सर्वविदित आलोचनाऐं प्रारम्भिक बौद्ध धर्म में (600 ई. पू. से) विकसित हुई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- बौद्धों ने इस बात को अंगीकार किया कि समाज में विषमता मौजूद थी किंतु यह भेद न तो नैसर्गिक थे और न ही स्थाई रहेंगे।
- बौद्धों ने जन्म के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा को अस्वीकार किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. वर्ण भेद की सर्वप्रथम आलोचना किनके द्वारा की गई ?

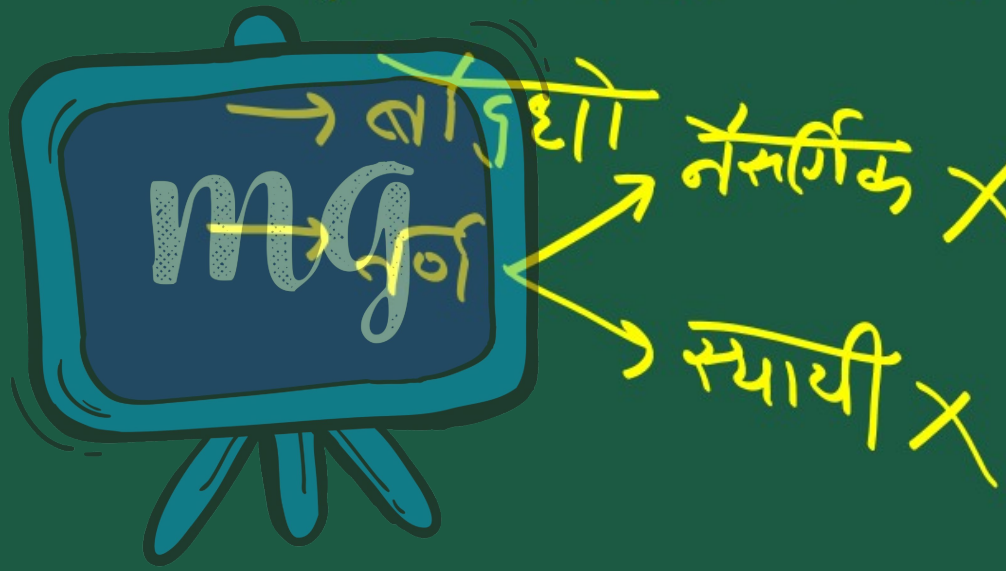

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

एक वैकल्पिक सामाजिक रूपरेखा : संपत्ति में भागीदारी

- अभी तक हमने वे परिस्थितियां देखी जहां लोग अपनी संपत्ति के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा का दावा करते थे, या फिर उन्हें वह स्थिति प्रदान की जाती थी।
- यद्यपि समाज में अन्य संभावनाऐं भी थीं जहां दानशील आदमी का भी सम्मान किया जाता था तथा कृपण व्यक्ति या जो स्वयं अपने लिए संपत्ति संग्रह करता था, घृणा का पात्र होता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- प्राचीन तमिलकम (तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल) एक ऐसा ही क्षेत्र था जहां उपरोक्त आदर्शों को संजोया जाता था।
- इस क्षेत्र में 2000 वर्ष पहले अनेक सरदारियां (चोल, चेर, पांड्य) थीं। ये सरदार अपनी प्रशंसा गाने वाले चारण और कवियों के आश्रयदाता होते थे।
- तमिल भाषा के संगम साहित्य में सामाजिक और आर्थिक संबंधों का अच्छा चित्रण है जो इस ओर इंगित करता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

हालांकि धनी और निर्धन के बीच विषमताएं थीं लेकिन जिन लोगों का संसाधनों पर नियंत्रण था उनसे यह अपेक्षा की जाती थी वे मिल-बाँट कर उसका उपयोग करें।

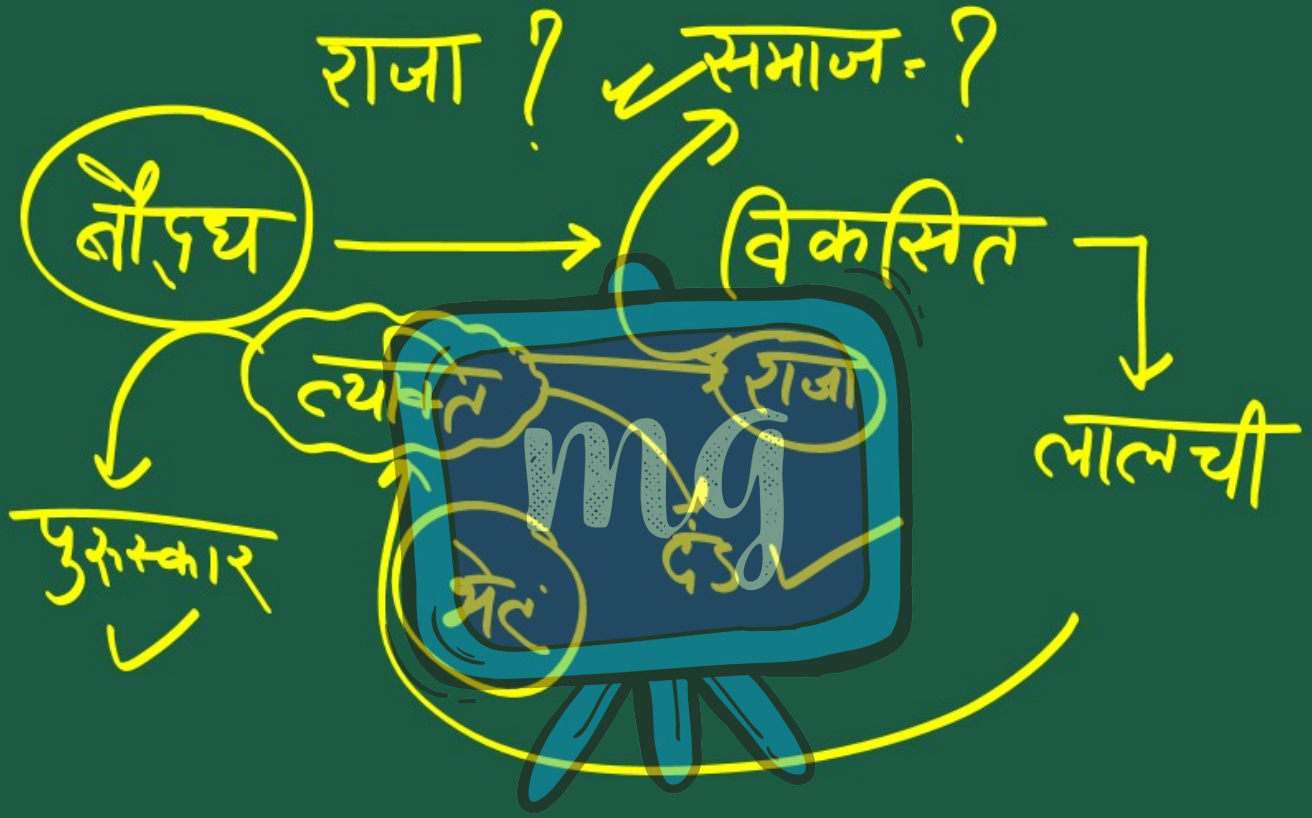

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

राजा ? समाज = ?

बौद्ध → विकसित → लालची

त्यक्ति → राजा

पुरुस्कार

सेटं

दंड

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सामाजिक विषमताओं की व्याख्या

एक सामाजिक अनुबंध :-



- बौद्धों ने समाज में फैली विषमताओं के संदर्भ में एक अलग अवधारणा प्रस्तुत की।
- साथ ही समाज में फैले अंत विरोधों को नियमित करने के लिए जिन संस्थाओं की आवश्यकता थी उन पर भी अपना दृष्टिकोण सामने रखा।
- सुत्तपिटक नामक ग्रंथ में एक मिथक वर्णित है जो यह बताता है कि प्रारम्भ में मानव विकसित नहीं थे। वनस्पति जगत भी अविकसित था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मानव विकसित X
वनस्पति विकसित X

आवश्यकता अनुसार → व्यवस्था पतनशील

विचार ← लालच ↑

सभी जीव शांति के एक निर्बाध लोक में रहते थे और प्रकृति से उतना ही ग्रहण करते थे जितनी एक समय के भोजन की आवश्यकता होती थी। किंतु यह व्यवस्था क्रमशः पतनशील हुई। मनुष्य अधिकाधिक लालची, हिंसक और कपटी हो गये। इस स्थिति में उन्होंने विचार किया कि

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



"क्या हम एक ऐसे मनुष्य का चयन करें जो उचित बात पर क्रोधित हो।

जिसकी प्रताड़ना की जानी चाहिए उसको प्रताड़ित करें

जिसे निष्कासित किया जाना हो उसे निष्कासित करें।

बदले में हम उसे चावल का अंश देंगे....सब लोगों द्वारा चुने जाने के कारण उसे महासम्मत की उपाधि प्राप्त होगी।"

इससे यह ज्ञात होता है कि राजा का पद लोगों द्वारा चुने जाने पर निर्भर करता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



'कर' वह मूल्य था जो लोग राजा को सेवा के बदले उसे देते थे।

यह मिथक इस बात को दर्शाता है कि आर्थिक और सामाजिक संबंधों को बनाने में मानवीय कर्म का बड़ा हाथ था।

इसके और भी आशय थे कि – यदि मनुष्य स्वयं एक प्रणाली को बनाये रखने के लिए जिम्मेदार थे तो भविष्य में उसमें परिवर्तन भी ला सकते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q बौद्ध ग्रंथ सुत्त पिटक में वर्णित सिंचक पर चर्चा करें यह बताइये की 'राजा' पद की उत्पत्ति कैसे हुई होगी?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



भाषा
- पालि
- प्राकृत
- तमिल

प्रकार
- मंत्र
- कथा

लेखक
- वियार

श्रोता
- अभिरूचि

साहित्यिक स्त्रोतों का इस्तेमाल

इतिहासकार और महाभारत :-

इतिहासकार किसी ग्रंथ का विश्लेषण करते समय अनेक पहलुओं पर विचार करते हैं :-

भाषा

वे इस बात का परीक्षण करते हैं कि ग्रंथ किस भाषा में लिखा गया : पालि, प्राकृत या तमिल जो आम लोगों द्वारा बोली जाने वाली थी अथवा संस्कृत जो विशिष्ट रूप से पुरोहितों और खास वर्ग द्वारा प्रयोग में लाई जाती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



प्रकार

- वे ग्रंथ के प्रकार पर भी ध्यान देते हैं कि – क्या ये ग्रंथ 'मंत्र' थे जो अनुष्ठानकर्ताओं द्वारा पढ़े और उच्चारित किये जाते थे अथवा ये 'कथा' ग्रंथ थे जिन्हें लोग पढ़ और सुन सकते थे तथा दिलचस्प होने पर जिन्हें दुबारा भी सुनाया जा सकता था?

लेखक

- वे लेखक को भी जानने का प्रयास करते हैं जिसके दृष्टिकोण और विचारों ने ग्रंथों को रूप दिया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



श्रोता

- वे ग्रंथों के श्रोताओं का भी परीक्षण करते हैं क्योंकि लेखकों ने रचना करते समय श्रोताओं की अभिरूचि का ध्यान रखा होगा।
- वे ग्रंथ के रचना काल और उसकी रचना भूमि का भी विश्लेषण करते हैं।
- इन सब मुद्दों का जायजा लेने के बाद ही इतिहासकार किसी भी ग्रंथ की विषयवस्तु का इतिहास के पुर्ननिर्माण के लिए इस्तेमाल करते हैं।
- महाभारत जैसे जटिल ग्रंथ का पुर्ननिर्माण कितना कठिन रहा होगा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

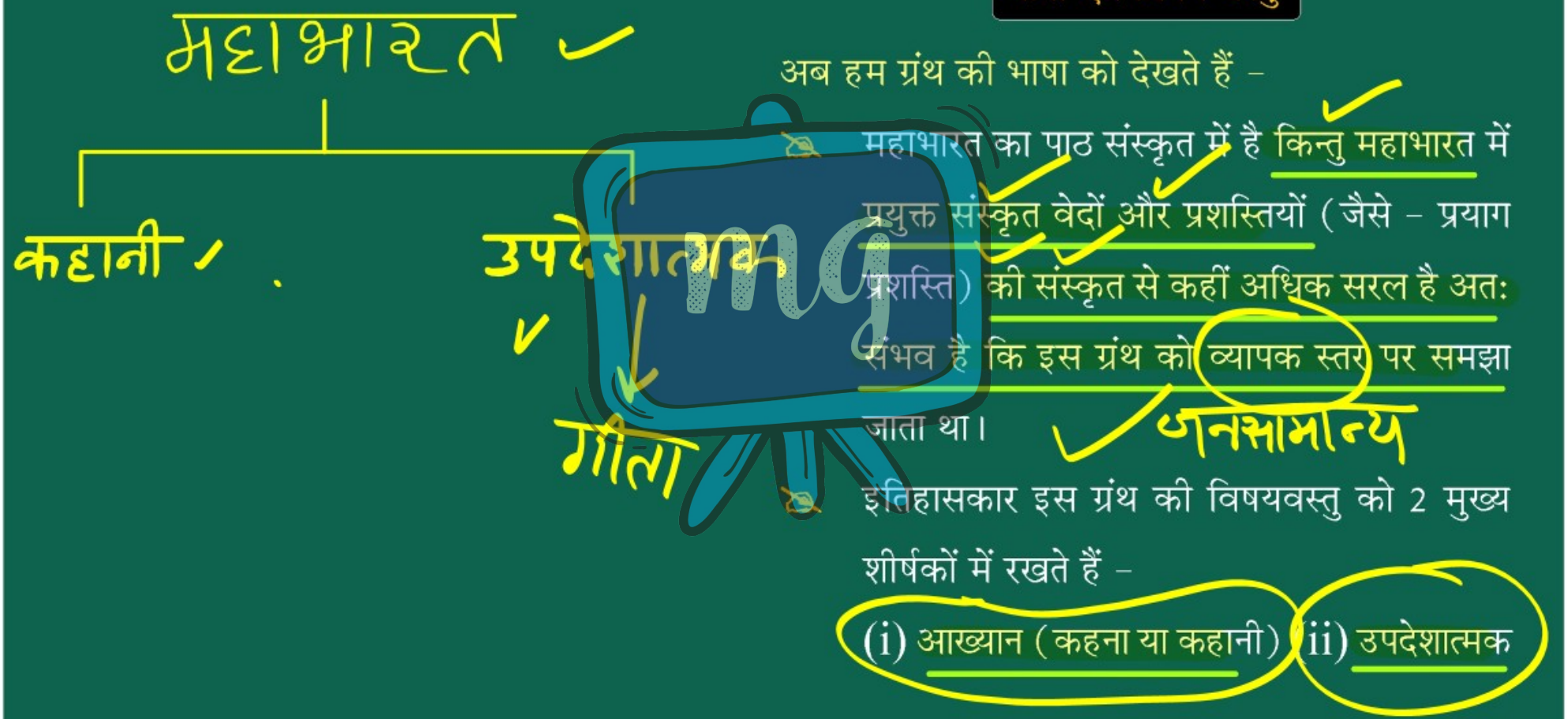

भाषा एवं विषय वस्तु

अब हम ग्रंथ की भाषा को देखते हैं –

- महाभारत का पाठ संस्कृत में है किन्तु महाभारत में प्रयुक्त संस्कृत वेदों और प्रशस्तियों (जैसे – प्रयाग प्रशस्ति) की संस्कृत से कहीं अधिक सरल है अतः संभव है कि इस ग्रंथ को व्यापक स्तर पर समझा जाता था। जनसामान्य
- इतिहासकार इस ग्रंथ की विषयवस्तु को 2 मुख्य शीर्षकों में रखते हैं –

(i) आख्यान (कहना या कहानी) (ii) उपदेशात्मक

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- आख्यान में कहानियों का संग्रह है और उपदेशात्मक में सामाजिक आचार विचारों के मानदंडों का चित्रण है।
- यद्यपि यह विभाजन पूरी तरह से एकांकी नहीं है। आख्यानों में समाज के लिए सबक (उपदेश) हैं तथा उपदेशात्मक अंशों में कहानियां हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए

महाभारत का सबसे महत्वपूर्ण उपदेशात्मक अंश भगवद्गीता है जहां कुरूक्षेत्र की युद्धभूमि में श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हैं। इस दृश्य को चित्रों और मूर्तिकला में कई बार दर्शाया गया है। इस चित्र का काल अठारहवीं शताब्दी है।

इतिहासकारों का मानना है कि महाभारत एक नाटकीय कथानक था जिसमें उपदेशात्मक अंश बाद में जोड़े गये।

आरंभिक संस्कृत परम्परा के अनुसार महाभारत को 'इतिहास' की श्रेणी में रखा गया है जिसका अर्थ है 'ऐसा ही था'।

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि स्वजनों के बीच हुए युद्ध की स्मृति ही महाभारत का मुख्य कथानक है।

अन्य इस बात की ओर इंगित करते हैं कि हमें युद्ध की पुष्टि किसी और साक्ष्य से नहीं होती।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लेखक (एक या कई) और तिथियां



लिपिक श्री गणेश

परंपरा के अनुसार व्यास ने इस ग्रंथ को श्रीगणेश को लिखवाया। यह चित्र महाभारत के फारसी अनुवाद (1740–50) से लिया गया है।

यह ग्रंथ किसने लिखा है?

- संभवत: मूल कथा के रचयिता भाट सारथी थे जिन्हें 'सूत' कहा जाता था।
- ये भाट, क्षत्रिय योद्धाओं के साथ युद्धक्षेत्र में जाते थे और उनकी विजय व उपलब्धियों के बारे मे कविताऐं लिखते थे।
- इन रचनाओं का प्रेषण मौखिक रूप से हुआ।
- 5वीं शताब्दी ई.पू. से ब्राह्मणों ने इस कथा परंपरा पर अपना अधिकार कर लिया और इसे लिखा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- यह वह समय था जब कुरू और पांचाल जिनके इर्द-गिर्द महाभारत की कथा घूमती है, मात्र सरदारी से राजतंत्र के रूप में उभर रहे थे।
- ये नये राजा अपने इतिहास को अधिक नियमित रूप से लिखना चाहते थे।
- यह भी संभावना है कि नये राज्यों की स्थापना से होने वाली उथल-पुथल के कारण पुराने सामाजिक मूल्यों के स्थान पर नवीन मानदंडों की स्थापना हुई जिसका इस कहानी के कुछ भागों में वर्णन मिलता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- 200 ई. पू.–200 ई. के बीच जब विष्णु देवता की आराधना प्रभावी हो रही थी, इस महाकाव्य के महत्वपूर्ण नायक 'श्रीकृष्ण' को विष्णु का रूप बताया जा रहा था।
- कालान्तर में 200–400 ई. के बीच मनुस्मृति से वृहत उपदेशात्मक प्रकरण महाभारत में जोड़े गये। इन सब परिवर्धनों के कारण यह ग्रंथ जो प्राथमिक रूप में 10000 श्लोकों से भी कम का रहा होगा, बढ़कर 1 लाख श्लोकों वाला हो गया।
- साहित्यिक परंपरा में इस वृहत रचना के रचयिता ऋषि व्यास माने जाते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

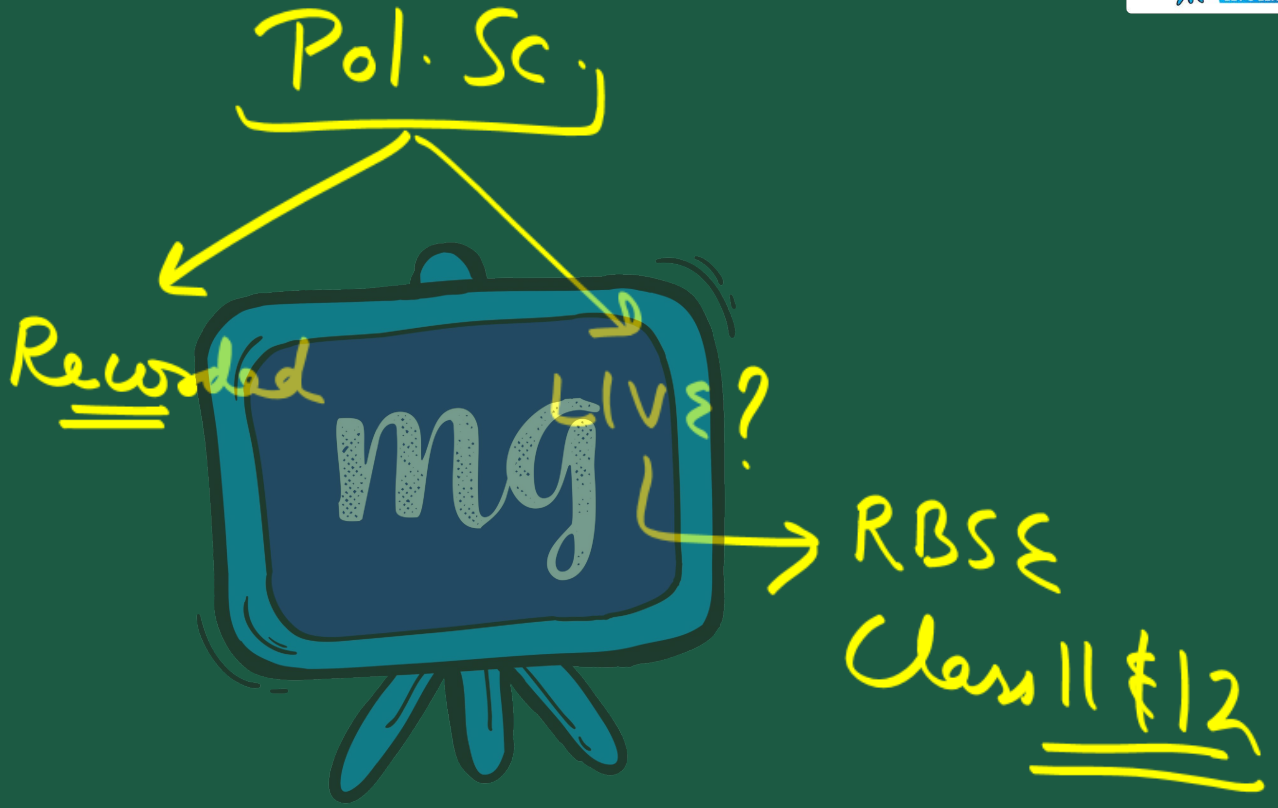

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Copy link → Status
Paste



8000
-10000